देवनागरी लिपि : समस्याएं एवं समाधान

डॉ. कमलेश सिंह
39/6ए कटरा रोड, इलाहाबाद

शुद्धता, स्पष्टता तथा सरलता की दृष्टि से देवनागरी लिपि का स्थान विश्वभर की लिपियों में सर्वोपरि है, लेकिन कोई भी लिपि जिस भाषा के लिए बनती है, उसके लिये पर्याप्त तथा उपयुक्त होती है । किन्तु कालान्तर में ध्वनियों में विकार आ जाता है तथा लिपि वही रह जाती है तो किन्ही चिन्हों का अभाव या आधिक्य पैदा हो जाता है । फलस्वरूप लिपियों में कुछ समस्यायें दिखई पड़ने लगती हैं । यथा –

- एक वैज्ञानिक लिपि में एक ध्वनि के लिए एक ही वर्ण होना चाहिए । देवनागरी में ल, अ, झ आदि के लिए दो–दो चिन्ह हैं ।
- वैज्ञानिक लिपि में चिन्ह लेखन में उसी क्रम में आना चाहिए । इस दृष्टि से नागरी में बहुत कमियां हैं । जैसे 'उ' 'ऊ' 'ऋ' की मात्रा नीचे तथा 'ए' 'ऐ' की ऊपर दी जाती है ।
- देवनागरी लिपि के ध्वनि चिन्ह सर्वत्र स्पष्ट नहीं है । यथा-ख (खाना रवाना)। इसी प्रकार शिरोरेखा न होने पर तथा लगाए जाने की स्थिति में 'ध' 'घ' जैसे वर्ण अदल-बदल कर पढ़े जाने की आशंका बनी रहती है ।
- भारतीय भाषाओं की अनेक प्राचीन ध्वनियॉं लुप्त हो गई हैं । उनके लिए जो लिपि चिन्ह थे, वे अब वैज्ञानिक दृष्टि से त्रुटिपूर्ण जैसे 'ऋ' का 'र' की तरह 'ष' का 'श' तथा 'ख' की तरह प्रयोग होने लगा है ।
- देवनागरी में कई वर्णो के दो-दो रूप प्रचलित हैं । जैसे झ-झ, अ-अ । अंको में भी यही स्थिति है ६-६ , ४- ४ आदि ।
- देवनागरी में शिरोरेखा का प्रयोग अनावश्यक अलंकरण के रूप में होता है । इससे लेखक को अतिरिक्त श्रम करना पड़ता है ।
- देवनागरी में संयुक्त करने की कोई निश्चित पद्धति नहीं है। कभी वर्णो का संयोग आमने-सामने होता है तो कभी ऊपर-नीचे । जैसे क्क, ट्ट आदि ।
- देवनागरी लिपि बड़ी होने के कारण हिन्दी का टाइपराइटर बनाना पड़ता है । संयुक्ताक्षरों की भी कठिनाई इस दृष्टि से विचारणीय है ।
- देवनागरी लिपि में लेखन के लिए बार–बार हाथ उठाना पड़ता है । इससे ज्यादा श्रम करना पड़ता है तथा गति बाधित होती है ।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि देवनागरी लिपि में कई समस्यायें विद्यमान हैं । इन समस्याओं के समाधान हेतु व्यक्तिगत, संस्थागत तथा सरकारी प्रयास किए गए हैं। व्यक्तिगत प्रयासों में प्रथम नाम गोविन्द रानाडे का आता है लेकिन व्यवस्थित रूप से सुधारों का श्रीगणेश तिलक ने 'केसरी' के माध्यम से 1904 से किया । तिलक ने 190 टाइपों का तिलक–टाइप फॉट बनाया था । सुनीत कुमार चटर्जी ने देवनागरी की समस्या का समाधान रोमन लिपि में खोजा लेकिन चटर्जी जी को मान लेने पर हमारा प्राचीन साहित्य से सम्बन्ध टूट जायेगा । श्रीनिवास ने अल्पप्राण व्यंजन (क,च,ट,प,) पर ही ध्वनि चिन्ह लगाकर उसे महाप्राण व्यंजन बना दने का सुझाव

दिया था लेकिन इस सुधार को मानने पर नागरी में व्यापक तौर पर सुधार करना पड़ेगा । डॉ. गोरखनाथ ने हिन्दी टाइप संख्या 700 से घटाकर 200 करने के लिए उ, ऊ, ऋ,, ए, ऐ, ओ, औ की मात्राओं अनुस्वार तथा अर्द्धचन्द्र को कुछ दाहिनी और हटाकर लिखने का सुझाव दिया । विनोबा भावे ने भी 'लोकनागरी' के माध्यम से कुछ सुधार करवाया ।

संस्थाओं के सुधारों में वर्धा की "राष्ट्रभाषा प्रचार समिति" "नागरी प्रचारिणी सभा" तथा 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' के नाम लिये जा सकते हैं। 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' वर्धा ने 814 सुधारों का प्रस्ताव किया। वर्धा समिति के सुधार 'अ' की बारहखड़ी नाम से प्रसिद्ध है। 'नागरी प्रचारिणी सभा' ने सुझाव के रूप में संस्कृत देवनागरी लिपि का प्रस्ताव प्रस्तुत किया था। 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' ने सुधार संबंधी 14 प्रस्तावों को बताया था। इनमें शिरोरेखा की आवश्यकता, प्रत्येक वर्ण का ध्वनि के उच्चारण क्रम में लिखना, संयुक्ताक्षरों में उच्चारण क्रमों का निर्वाह करना। वर्धा समिति ने नये प्रस्तावों की अपेक्षा हिन्दी-साहित्य सम्मेलन द्वारा प्रस्तावित सुझावों की पुष्टि की ।

लिपि सुधार संबंधी प्रशासकीय प्रयासों के संबंध में तीन प्रयत्न (हिन्दुस्तानी- शीघ्र लिपि, लेखन यंत्र समिति (1948) तथा उत्तर प्रदेश सरकार के प्रयत्न) गिनाये जाते हैं । इनमें उ.प्र. सरकार का प्रयत्न प्रमुख है । 1947 में उत्तर प्रदेश सरकार ने नरेन्द्रदेव की अध्यक्षता में एक समिति गठित की थी । इस समिति को "वर्धा समिति" 'नागरी प्रचारिणी सभा' तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रस्ताव पूर्णतः स्वीकृत न हुए । 'अ' की बारहखड़ी को भ्रामक माना गया । इस समिति ने मात्र मशीनों के लिए लिपि में अधिक परिवर्तन को खारिज कर दिया । इस समिति की मुख्य सिफारिशें निम्न थीं-

- अनुस्वार तथा पंचमकार के बदले 'ं' का प्रयोग किया जाना चाहिए ।
- द्विविध अक्षरों में 'अ', 'झ', 'ध', 'भ', 'त्र' को अपनाया जाय ।
- शिरोरेखा लगाई जाए ।
- किसी व्यंजन के नीचे दूसरा व्यंजन नहीं जोड़ना चाहिए ।
- संयुक्त व्यंजन में पहले व्यंजन की पाई हटा दी जाए तथा शेष व्यंजन हलन्त् करके लिखा जाए ।
- केवल पूर्ण विराम को छोड़कर अंग्रेजी के विराम चिन्हों का प्रयोग किया जाय।

अभी इस समिति का कार्य पूर्ण नहीं हुआ था तब भी उत्तर प्रदेश सरकार ने 1953 में लखनऊ सम्मेलन आयोजित किया । इसमें किंचित परिवर्तनों के साथ नरेन्द्र देव कमेटी की सिफारिशों को स्वीकार कर लिया गया । इनमें कतिपय संशोधन निम्न हैं –

- छोटी 'इ' की मात्रा बाई तरफ न लगा कर दाईं तरफ लगाई जाए।
- 'र' के मेल से बने शब्दों में रेफ लगाने के बजाय हलन्त् का प्रयोग किया जाए ।
- संयुक्ताक्षर लिखते समय खड़ी पाई युक्त वर्ण में से खड़ी पाई हटा दी जाए ।
- 'त्र' को निकाल दिया जाए ।

इन संशोधनों का स्वागत न होने पर उत्तर प्रदेश सरकार ने पुनः 1957 में सम्मेलन बुलाया इसमें छोटी 'इ' तथा रेफ के संबंध में निर्णयों को रद्द कर दिया गया, शेष निर्णय ज्यों के त्यों बने

रहे । केन्द्र सरकार ने 1959 में शिक्षा मंत्रियों के सम्मेलन में 1953 तथा 1957 के निर्णयों को मान्यता दी, साथ में ऋ, ऌ को रखने की कोई आवश्यकता न समझी । 'ड़' 'ढ' जो 1953 तथा 1957 के सम्मेलनों में अस्वीकृत थे, रख लिये गये ।

एक बात और- टाइपिंग के लिए वर्ण सुधार की बात कही जाती रही है । पुराने संस्कृत ग्रन्थों की लिपि को लेकर कठिनाई थी । टाइपिंग के लिए लिपि सुधारने से पुराने ग्रन्थों को पढ़ने में नये छात्रों को कठिनाई की बात कही गई लेकिन कम्प्यूटर के आने के साथ देवनागरी लिपि में टाइपिंग की समस्या का अन्त हो गया है ।

अब तक की लिपि समाधान चर्चा से स्पष्ट है कि सभी सुझावों में कतिपय सकारात्मक हैं तो कतिपय नकारात्मक तथा कुछ हास्यास्पद । लिपि का सम्बन्ध वास्तव में समग्र साक्षर जनता से होता है, अतएव किसी लिपि को जनता में प्रचलित करने के लिए यह आवश्यक है कि उसकी सहानुभूति पाकर ही आगे बढ़ा जाए । वस्तुतः देवनागरी लिपि का विकास स्वाभाविक ढंग से हो रहा है । उसके विकास में अगर सुधारक आमूल परिवर्तन न करें तो उत्तम रहेगा ।